International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 21-09-2019; Accepted: 22-10-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 6; November 2019; Page No. 56-57

अधबुनी रस्सी एक परिकथा में वर्चस्व की संस्कृति

आशीष

पी एच.डी. शोधार्थी, हिन्दी विभाग तमिलनाडु केन्द्रीय विश्वविद्यालय, तिरुवारूर, तमिलनाडु, भारत

प्रस्तावना

भारतीय संविधान ने हम सबको एक समान अधिकार दिया है। आज़ादी के बाद से संविधान ने समाज में प्रचलित रूढ़िबद्ध कुरीतियों को खत्म तो किया ही साथ ही साथ सदियों से संवर्ण वर्ग से दबे होने के कारण समाज में समानता स्थापित हो, इस कारण कुछ प्रावधान भी दिए। किन्तु वास्तविकता आज भी कुछ ज्यादा बदली नहीं है। संवर्ण वर्ग मनुष्य होने के नाते आज भी कई स्थानों में दलित वर्ग को मनुष्यत्व का दर्जा नहीं देता है। समाज में अपने वर्चस्व को कायम रखने एवं सत्ता में बरकरार रहने के लिए संवर्ण वर्ग ने निम्न वर्ग के प्रति क्रूर अमानवीय व्यवहार लगातार जारी है। इस निम्न वर्ग में विशेष तौर पर हम दलित वर्ग की बात करें तो स्थिति और भी दयनीय है। दलित वर्ग को प्रत्येक स्तर पर उच्च वर्ग की उपेक्षा झेलनी पड़ती है। हर तरह से उसका विरोध किया जाता है, उसका शोषण किया जाता है डॉ. एन. मोहनन के शब्दों में कहे तो-"दलित उस वर्ग को सूचित करता है जिसे सामाजिक एवं एतिहासिक कारणों से अस्पृश्यता और शोषण की अमानवीय व्यथा झेलनी पड़ी है और अस्पृश्यता के नाम पर सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं से दूर रखा गया है।"

हिन्दी साहित्य के माध्यम से समाज में दलित वर्ग की स्थिति को आधार बनाकर अनेक उपन्यास लिखे गए हैं। जिसमें बड़ी ही सजगता से दलित वर्ग की समस्याओं और उनके अधिकारों का वर्णन किया गया है। इसी कड़ी में सच्चिदानंद चतुर्वेदी कृत 'अधबुनी रस्सी : एक परिकथा' को देखें तो यह भारतीय समाज की संस्कृति और सत्ता की टकराहट को प्रस्तुत करता है। भारतीय संस्कृति जो समाज में सबको समान अधिकार देने के पक्ष में हैं, उसका व्याख्या वे अपने अनुसार करते है। संवर्ण वर्ग जिसने अपने आपको इतना मजबूत बना लिया है कि प्रत्येक तंत्र में उसका हस्तक्षेप है। लेखक ने दिखाया कि भारत की स्वतन्त्रता के बाद आम जनमानस का किस प्रकार मोहभंग हुआ और विशेष रूप से दलित वर्ग जो यह समझ बैठा था कि स्वतन्त्रता के पश्चात् उसको समान अधिकार मिलेगा वह उसके लिए भ्रम ही साबित होता है। समाज में राजनीति, सत्ता एवं वर्चस्व के कारण किस प्रकार भारतीय संस्कृति अपसंस्कृति की ओर बढ़ती है इसका सशक्त उदाहरण हमें उपन्यास में वर्णित ग्रामीण परिवेश से मिलता है।

उपन्यास के केंद्र में 'डमरूआ' गाँव है। गाँव दो वर्गों में विभक्त है पहला वर्ग है 'बमनन टोला' का और दूसरा वर्ग है पूरब टोला का। गाँव में बमनन टोला का वर्चस्व कायम है और वे आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से समर्थ है। वहीं पूरब टोला के लोगों का संबंध दलित समाज से है। कई पात्र हैं जो प्रकाश में आते हैं लेकिन उनमें मुख्य रूप से बलवान, किसुन और छज्जूराम चौबे, शंकर हैं, जो पूरी कथा के इर्द-गिर्द रहते है। छज्जूराम चौबे गाँव में संवर्ण वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा बलवान और उसका बेटा दलित वर्ग से आते हैं। दलित परिवार के अधिकतर सदस्य बमनन टोला के घरों में काम कर अपना जीवन-यापन करते हैं। अपने परिवार के भरण-पोषण की खातिर वे न जाने कितना अत्याचार एवं अपमान सहते हैं। वे इसे अपनी नियति समझकर इसी परंपरा में निरंतर आगे बढ़ते हैं एवं अपनी मानसिक गुलामी से मुक्ति का रास्ता नहीं खोज पाते। इसका उदाहरण उपन्यास के आरंभ में ही मिलता है जब बलवान काशी के खेत में काम करता है और वहीं उसका बेटा किसुन शंकर चौबे के घर में नौकर बनकर काम करता है, दोनों बाप-बेटे निरंतर प्रताड़ित होते हैं लेकिन उसका विरोध नहीं करते।

छज्जूराम चौबे ने अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद भी नौकरी नहीं की, क्योंकि समाज में उसका वर्चस्व कायम होने के कारण घर पहले से ही सम्पन्न था इसलिए उसे नौकरी करने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई, अतः वह राजनीति की ओर उन्मुख हो गया। अपनी महत्वाकांक्षा लिए वे राजनीति में कूद पड़ता हैं और मात्र अवसरवादी बनकर रह जाता हैं। गाँव में निम्न वर्ग के लोगों के बीच वर्चस्व का प्रयोग कर उनका निरंतर शोषण करता हैं-"डमरूआ नौकरी से नहीं राजनीति से दबेगा।" छज्जूराम चौबे को यह विश्वास है कि बिना नौकरी किए वह अपने जीवन का निर्वाह कर सकता है, क्योंकि उसे यह परंपरा अपने वंश से प्राप्त हुई है जिससे वह शीर्ष पर ही कायम रहेगा-"सत्ता संपत्ति और समझ से व्यक्तित्व वंश के बाद वर्ण व्यवस्था कायम हुई और संरचनाओं के नियंत्रण, संचालन और विकास का अधिकार ऊंचे,वर्णों या वर्गो के हाथ में आया।"

बलवान परिवार का मुखिया होने के नाते अपनी ज़िम्मेदारी समझता है और काशी के खेत में साझेदारी से खेती करता है, ताकि उसके बेटे की पढ़ाई, बेटी की शादी, घर खर्च आदि समस्याओं का कुछ निवारण हो सके-"तुम लोग बिल्कुल चिंता मत करो। सात-आठ मन गेहूँ भी हिस्से में मिल गये, सबके लिए कुछ न कुछ खरीद दूँगा।" वह रात-दिन परिश्रम कर खेत में अच्छी फसल की पैदावार करता है, लेकिन काशी जो ग्राम प्रधान भी है बड़ी चालाकी से राजनीति के दांव-पेंच खेल बलवान का शोषण करता है और अंत में उसको केवल दो मन गेहूँ ही देता है। जिससे बलवान और उसका परिवार ठगा महसूस करता है और चाहकर भी वे उसका प्रतिरोध नहीं कर पाते हैं -"काशी ने कहा-जोड़ घटाकर तुम्हारे हिस्से में दो मन गेहूँ निकले...ककुआ अम्मा की ओर देखने लगे, अम्मा ककुआ की ओर मानों एक दूसरे से पूछ रहे हों-यह कैसे? दो मन गेहूँ बस! सर्दी में रात-रातभर खेत की जुताई, दिन-दिन भर खेत की सिंचाई, पूरी की पूरी धूप का शरीर में सोख लेना, दो मन ? बस दो मन ?" चूँकि खेत में होने वाली पैदावार पर साझेदारी दोनों तरफ से हुई थी उसके बावजूद काशी समाज में अपने वर्चस्व के कारण बलवान का शोषण करता है। यहाँ स्पष्ट रूप से संवर्ण द्वारा निम्न वर्ग का शोषण देखा जा सकता है। समाज में अपनी काशी अपनी सत्ता के वर्चस्व के बल पर बलवान पर हावी हो आता है और वहीं बलवान अपना विरोध तक प्रकट नहीं कर पाता, यह हम सभी जानते हैं कि हमेशा से दलित वर्ग का इतना शोषण किया जाता रहा है कि वह उनसे विद्रोह करने की हिम्मत नही जुटा पाता था और जो व्यक्ति विद्रोह कर भी लेता था उसका अस्तित्व ही समाज से समाप्त कर दिया जाता था।

स्वतन्त्रता के बाद यूँ तो सबने सपना देखा था कि आशा की नई किरण हम आमजनमानस पर पड़ेगी और पिछले कई वर्षों से हम गुलामी की जंजीरों में जकड़े हुए थे उससे मुक्ति पाकर समाज में समानता आएगी। हमें स्वतन्त्रता तो मिली लेकिन एक खास वर्ग द्वारा दलित वर्ग को मानसिक रूप से गुलाम बनाए रखा गया। दलित वर्ग के लोगों को कभी भी समाज में समानता का अधिकार नहीं मिला, हमेशा उन्हें नीचा दिखाया गया, अपमानित किया गया, उनके अधिकारों का हनन किया एवं प्रत्येक स्तर पर उनका शारीरिक एवं मानसिक शोषण किया गया। इस स्थिती को उपन्यास के माध्यम से भी सशक्त रूप से दिखाया गया है, स्वतन्त्रता के पश्चात् जब डमरूआ गाँव में पहली बार चकबंदी का आदेश आता है तो सत्ता में आसीन संवर्ण वर्ग के प्रतिनिधि छज्जूराम चकबंदी से बचने के लिए अपने वर्ग के लोगों के साथ मिलकर षड्यंत्र रचता है, जिसका सीधा सा अर्थ है कि वर्चस्व का

उपयोग कर पूरब टोला की उपजाऊ भूमि को हथिया लेना और पूरब टोला के लोगों के साथ अन्याय होना। दलित अधिकारी केशवानी जो चकबंदी अधिकारी बनकर डमरूआ गाँव आता है वह भी समाज में असमानता का भाव ही रखता है। वहीं संवर्ण वर्ग के लोगों को पहले यह आभास होता है कि वह अधिकारी दलित वर्ग से है इसलिए वह बमनन टोला के साथ अन्याय करेगा-"सी.ओ. बामन नहीं है, चकबंदी में बमनों की लुटिया डूबी समझो।" दलित वर्ग का प्रतिनिधि होने के बावजूद वह दलित वर्ग के लोगों के साथ उपेक्षा का भाव रखता है और निरंतर संवर्ण वर्ग का ही साथ देता है। वहीं दूसरी और धन और वर्चस्व के बल पर बमनन टोला के लोग अपनी बंजर भूमि दलितों के मत्थे मढ़ देते हैं और उनकी उपजाऊ भूमि को चकबंदी का सहारा लेकर अपने हिस्से में मिला लेते हैं। जिसका उदाहरण बलवान और शंकर के रूप में देखने को मिलता है। शंकर अपनी शक्ति का प्रयोग कर बलवान का खेत अपने खेत से बदलवा लेता है। बलवान केवल नाम से ही बलवान है वास्तविक स्थिति में वह समाज में संवर्ण वर्ग के बोझ तले दबा हुआ निर्बल मानव है। यह सर्वविदित है कि संवर्ण वर्ग में अधिकतर लोग खेती नहीं करते, मजदूरी नहीं करते वरन वे अपने खेतों में किसानों को रखकर उनकी मेहनत की ही कमाई बटोरते हैं। जिसका उदाहरण बलवान के द्वारा मिलता है, अर्थात् सामाजिक और आर्थिक रूप से संवर्ण वर्ग यही चाहता है कि वह निम्न वर्ग को अपने नीचे दबाए रखें, उन्हें किसी भी तरह से समर्थ न होने दें। वे समाज में सर्वोपरि बने रहकर निम्न वर्ग पर अपना आधिपत्य बनाए रखना चाहते हैं, इसी चक्र को वे कई पीढ़ियों से अपनाते हुए आ रहे है।

उपन्यास के माध्यम से देखें तो स्वतंत्र्योत्तर भारत की वास्तविक स्थिती स्पष्ट नज़र आती है, जिसमें संवर्ण वर्ग राजनीति, सत्ता एवं वर्चस्व के माध्यम से समाज में अपनी पैठ जमा चुका है। इस स्थिती को लेखक ने बड़ी ही संजीदगी से हमारे सामने रखा है। जब उत्तर प्रदेश में ग्राम पंचायत के चुनाव की घोषणा होती है और यह अनिवार्य कर दिया जाता है कि डमरूआ ग्राम पंचायत के चुनाव में पूरब टोला (दलित वर्ग) से ही कोई व्यक्ति ग्राम प्रधान बन सकता है, तो संवर्ण वर्ग के लोग चुप कैसे बैठ सकते थे। उन्होंने दूसरा रास्ता निकाला और दलित वर्ग के माध्यम से अपना वर्चस्व कायम करने का प्रयास किया। छज्जू द्वारा किसुन को ग्राम प्रधान बनने के लिए समर्थन दिया गया, ताकि किसुन के जीतने पर लगाम छज्जू के हाथों में ही रहे, किसुन को मात्र कठपुतली बनाकर रख दिया जाता है-"प्रधानी का खूंटा तो बदल जाए पर उसकी नकेल अपनी हाथों में बनी रहे।" वहीं दूसरी ओर किसुन यह समझता है कि उस गाँव के दलित वर्ग में से एकमात्र कक्षा आठवीं पास करने की योग्यता रखने से यह पद उसे मिला है। किसुन के प्रधान बनने की सूचना भर से सबकी अपनी-अपनी महत्वाकांक्षाएँ जाग उठती हैं। पूरब टोला के लोग भी उससे यह अपेक्षा रखते हैं कि उन्हीं के बीच में से एक व्यक्ति प्रधान बनने जा रहा है तो अब हमारे टोले में भी एक पानी का बोरिंग लग ही जाएगा, लेकिन बमनन टोला के लोग यह जानते हैं कि उन्हें किस तरह से दलित वर्ग पर हावी होना है, किसुन को सपने दिखाकर उसकी भावनाओं से खिलवाड़ किया जाता है। वे किसुन के माध्यम से गाँव में बोरिंग खुदवाने की अर्जी तो डलवाते हैं लेकिन उसको केवल अपने टोले तक ही सीमित कर के रख लेते हैं। इस तरह से किसुन न तो अपने टोले में बोरिंग लगवा पात है न ही अपने परिवार की किसी इच्छा को पूरा कर पाता है। धीरे-धीरे वह समाज में उपहास का कारण भी बन जाता है। उम्मीदें पूरे समाज की टूटती है वैसे ही जैसे बलवान की टूटी थी। तब बलवान भी ठगा गया था आज उसका बेटा भी ठगा गया है। अर्थात् किसुन के पिता बलवान की स्थिति भी वही थी जो आज किसुन की है। दोनों बाप-बेटे की डोर संवर्ण वर्ग के हाथों में ही रही, जिससे वे कभी मुक्त नहीं हो पाए।

के कई लोग समानता के पक्षधर होते है वे सबको एक ही दृष्टिकोण से देखने के आदि होते हैं फिर चाहे वे किसी भी वर्ग या धर्म से संबंध रखते हों। उच्च वर्ग निम्न वर्ग में न फँसकर वे सबको मानवता की दृष्टि से देखते हैं। ऐसे ही एक पात्र इस उपन्यास में देखने को मिलता है जो चकबंदी अधिकार केशवानी के लिए ड्राइविंग और बाकी का काम भी करता है। वर्ण से वह ब्राह्मण है इसके बावजूद समाज में वह समान रूप से रहता है। गाँव में केशवानी के साथ आने पर गाँव के संवर्ण लोगों में जब यह बात फैलती है जो वे इसको हज़म नहीं कर पाते एवं उससे सवाल करते है-"चलो थोड़ी देर के लिए मान लेता हूँ कि तुम असली ब्राह्मण हो, पर अपनी अंतरात्मा को साक्षी मान तुम मेरे इस प्रश्न का उत्तर दो कि तुम जिस प्रकार सी.ओ. के जूते साफ करते हो, उस प्रकार क्या असली ब्राह्मण कर सकता है? कम से कम डमरूआ का कोई ब्राह्मण तो नहीं करेगा।" यह मानसिकता पनपी कैसे इसके लिए भूतकाल में जाना पड़ेगा। लेकिन जब कोई व्यक्ति पढ़-लिख कर किसी अच्छे पद पर कायम है तो उससे जाति को लेकर कैसा भेदभाव आखिर है तो वह भी इंसान ही। या यह समझ लिया जाए कि समाज में केवल संवर्ण वर्ग ही उच्च पद पर आसीत होगा, इस संबंध में पुरुषोत्तम अग्रवाल कहते हैं-"विचार का गहरा संबंध वर्चस्व के संघर्ष और वर्चस्व के अर्थ तंत्र अर्थात् जाति-व्यवस्था से है।"

अतः उपन्यास अधबुनी रस्सी के माध्यम से लेखक ने यह दिखाया है कि समाज की वह रस्सी जिसके सहारे सबको ऊपर उठना था वह अपने आप में ही उलझ कर रह गई है। वर्ग संघर्ष का खेल आज भी कायम है जो समाज को पतन की ओर ले जा रही है। संवर्ण वर्ग हमेशा से दलित वर्ग की बढ़ती हुई ताकतों को रोकने की कोशिश करता है, दलित वर्ग का कोई भी प्रतिनिधि अपने समाज के उत्थान के लिए जो भी कदम उठाना चाहता है वह उससे डर जाता है और उसके बढ़ते हुए कदम को रोक देना ही उचित समझता है। वह समाज में अपना वर्चस्व कायम करना चाहता है जिसके लिए निरंतर संघर्ष भी करता है। वह संघर्ष होता है समाज से और पूरी की पूरी व्यवस्था से। समाज की बनी बनायी व्यवस्था के अंदर घुसकर उसमें हस्तक्षेप कर उसे अपने अनुरूप चलाता है। वर्चस्व के इस संघर्ष में दलित समाज का जो शोषण होता है वह कोई मायने नही रखता। एक बार वर्चस्व स्थापित होने के बाद फिर उसको संभालने का संघर्ष पूरी जिंदगी भर जारी रहता है। फिर चाहे वह कोई भी क्षेत्र हो, वह हमेशा अपने संवर्ण वर्ग मे से ही किसी का चुनाव करता है और उस परंपरा को आगे बढ़ाने का प्रयास करता है। लेकिन अंबेडकर द्वारा दिए गए संविधान से प्राप्त आरक्षण के फलस्वरूप दलित वर्ग भी अब प्रत्येक क्षेत्र में अपने कदम बढ़ा रहा है और इस संवर्ण वर्ग के वर्चस्व को चुनौती दे रहा है। शिक्षा, चिकित्सा और भी अनेक संस्थाओं में आज दलित वर्ग अपने पैर जमा रहा है। सामने आने वाली अनेक चुनौतियों का वह समझदारी से सामना कर रहा है और उसका जवाब भी दे रहा है। अतः भारत में रहने वाले प्रत्येक नागरिक के लिए यह आवश्यक है कि वह संविधान का पालन करें और समाज में पनपी वर्चस्व की संस्कृति को तोड़े एवं सबको समान अधिकार दें।

संदर्भ सूची

1. अधबुनी रस्सीण् सच्चिदानंद चतुर्वेदीण् राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।
2. सहायक ग्रंथ
3. मोहननण्एनण्ए समकालीन हिन्दी उपन्यासए पृष्ठ 145
4. शिशिरए कर्मेन्दुण् नवजागरण और संस्कृतिण् पृष्ठ 43
5. अग्रवालए पुरुषोत्तमण् संस्कृति रू वर्चस्व और प्रतिरोधण् पृष्ठ 13